रिक्शावाला

लाओ श

मूल चीनी से अनुवाद
तन्वी नेगी

इस उपन्यास में श्याङत्स के दुखांत का कारण केवल वह भ्रष्ट, विकृत समाज ही नहीं है बल्कि उसकी व्यक्तिवादी सोच भी है। बीसवीं सदी के तीसवें दशक का चीनी समाज अराजकता से भरा हुआ था। ऐसे समाज में नीचे तबके के लोगों की नियति पहले से ही निर्धारित होती थी। जैसा कि उपन्यास में लिखा है कि इस नरक से निकलने का कोई रास्ता नहीं है और एक गरीब रिक्शाचालक, चाहे कितनी कोशिश कर ले, अपनी नियति को नहीं बदल सकता है। उसने इसी नरक में जीना है और इसी नरक में एक दिन मर जाना है।

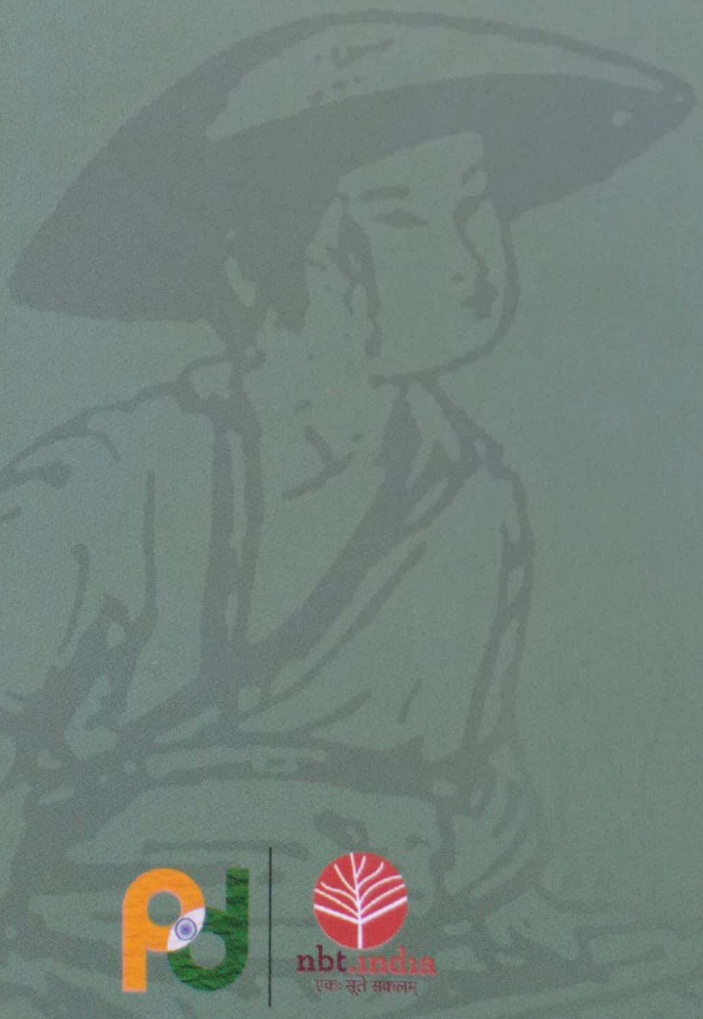

ISBN 812378871-1
9 788123 788715